शिक्षा में गुणवत्ता का साधन–अध्यापक शिक्षा

प्रो. (डॉ.) अमर ज्योति सिंह*
प्रो. (डॉ.) अमर बहादुर सिंह**

सारांश

अध्यापक शिक्षा के माध्यम से व्यापक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। अलग–अलग स्तरों में अध्यापकों की व्यवस्था की जाती है। अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य सांस्कृतिक परम्पराओं मानवीय मूल्यों वनीतिगत आचरण संबंधी मर्यादाओं को यथावत रखने का प्रयास करना है। जीवन मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इसलिए इन परिवर्तनशील जीवन मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन रहता है। इसलिए इन परिवर्तनशील जीवन मूल्यों का निर्धारण संवर्द्धन करना अध्यापक शिक्षा द्वारा हो सकता है। अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उन सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान से है जो किसी व्यक्ति को अध्यापक के उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाहक करने में समर्थ बनाते हैं।

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उन सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं तथा अनुभवों का ज्ञान प्रदान करने से है जो किसी व्यक्ति को अध्यापक के उत्तरदायित्वों को प्रभावशाली ढंग से निर्वाह करने में समर्थ बनाते हैं। अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय भावी वर्तमान अध्यापकों के सर्वांगीण विकास करने वाले शिक्षण प्रशिक्षण से है। अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत न केवल शिक्षण कला में निपुण बनाया जाता है बल्कि अध्यापकों को शिक्षा प्रक्रिया की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि विकसित करने योग्य भी बनाया जाता है। विश्वविद्यालय स्तर पर प्रदान की जाने वाली प्रथम शिक्षा उपाधि का नाम शिक्षा स्नातक (बी.एड) है तथा अध्यापक शिक्षा प्रदान करने वाली ऐसी संस्थाओं को शिक्षा महाविद्यालय अथवा अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय कहते हैं।[1]

स्वतंत्रता के पश्चात् स्कूली शिक्षा के तीव्र विकास के कारण प्राइमरी तथा सेकेण्ड्री स्कूलों के स्तर पर अध्यापकों की माँग बढ़ी।स्वतंत्रता पूर्व अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 'अध्यापक प्रशिक्षण' विद्यालयों व महाविद्यालयों की

***डी.लिट्. प्रोफेसर (समाजशास्त्र) एन.जी.बी.यू., इलाहाबाद**
****डी.लिट्. प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जनसंचार) एन.जी.बी.यू., इलाहाबाद**

स्थापना की गई थी। अध्यापन–कार्य करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाता था। परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात् इस धारणा में परिवर्तन हुआ और 'अध्यापक–प्रशिक्षण' (टीचर्स ट्रेनिंग) के बजाय 'अध्यापक शिक्षा' (टीचर्स एजूकेशन) शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री किलपैट्रिक के शब्दों में "सर्कस में काम करने वाले नटों और पशुओं को प्रशिक्षण दिया जाता है, परन्तु अध्यापकों को शिक्षा दी जाती है।"[2] देशभर में अध्यापक शिक्षा संस्थानों की संख्या बढ़ी और उनका विकास हुआ। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), यू.जी.सी. (विश्वविद्यालय अनुदानआयोग, 1956), एन.सी.इ.आर.टी. (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, 1961), शिक्षा आयोग (1964–66), एन.सी.टी.ई. (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, 1993) तथा जैसी संस्थायें अध्यापक–शिक्षण की गुणवत्ता एवं कुशलता बढ़ाने के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।[3]

ऐसा मानना है कि अध्यापक शिक्षा के माध्यम से व्यापक लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है। अलग–अलग सतरों पर अध्यापकों की व्यवस्था की जाती है। अध्यापक शिक्षा का लक्ष्य सांस्कृतिक परम्पराओं, मानवीय मूल्यों व नीतिगत आचरण सम्बन्धी मार्यादाओं को यथावत रखने का प्रयास करना है। जीवन मूल्यों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इसलिए इन परिवर्तनशील जीवन मूल्यों का निर्धारण व संवर्द्धन करना अध्यापक शिक्षा द्वारा हो सकता है। शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक शिक्षा वर्तमान में कोई नई प्रक्रिया नहीं है।सन् 1947–48 में माध्यमिक स्तर पर केवल 51 संस्थान थे जो सन् 2009 में बढ़कर 8000 से भी ज्यादा हो गए हैं।[4]

शिक्षा प्रक्रिया के प्रमुख अंगों–अध्यापक, छात्र व पाठ्यवस्तु–में अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। श्रेष्ठ अध्यापकों के अभाव में सुयोग्य छात्रगण अच्छी पाठ्य वस्तु होते हुए भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार से अच्छी से अच्छी पाठ्य वस्तु भी निपुण अध्यापकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। अध्यापक गण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। अच्छे अध्यापक छात्रों को वंछित व्यवहार परिवर्तन में सहायता प्रदान करते है तथा सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होते हैं। अध्यापक शिक्षा प्रणाली का केन्द्र होता है तथा समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चारों ओर विचरण करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति तक 2 वर्षीय पाठ्यक्रम चलाने वाले दीक्षा विद्यालय, 1 व 2 वर्ष तक प्रशिक्षण देने वाले माध्यमिक प्रशिक्षण विद्यालय तथा एकवर्षीय

पाठ्यक्रम वाले प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रचलित थे, जो क्रमशमिडिल, हाईस्कूल/इंटरमीडिएट तथा स्नातक परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वालों के लिए थे। इसी के साथ केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली व विश्वभारती में विनय भवन स्थापित हुए। राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय का नाम सेन्ट्रल पेडागाजिकल इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद रखा गया।

सन् 1948 में गठित राधाकृष्णन आयोग ने सैद्धान्तिक व पुस्तकीय ज्ञान के स्थान पर अध्यापन अभ्यास पर अधिक बल देने का सुझाव दिया। सन् 1952 में गठित मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को दो वर्षीय तथा स्नातकों को एकवर्षीय प्रशिक्षण देने, प्रशिक्षण महाविद्यालयों के साथ प्रदर्शनात्मक विद्यालयों की व्यवस्था करने तथा से वारत अध्यापकों को प्रशिक्षण के लिए सवेतन अवकाशवनिःशुल्क प्रशिक्षण देने की सिफारिश की।

अध्यापक शिक्षा का नया दौर सन् 1961 में भारत सरकार द्वारा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एनसीइआरटी) के गठन के साथ प्रारम्भ होता है। इस परिषद् नेउत्तरी क्षेत्र (जम्मूवकश्मीर, पंजाब, हरियाणाप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, दिल्ली) के लिए अजमेरमेंपूर्वी क्षेत्र (बिहार, उड़ीसा, असम, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, त्रिपुरा) के लिए भुवनेश्वर में पश्चिम क्षेत्र (महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात) के लिए भोपाल में तथा दक्षिणी क्षेत्र (आंध्रप्रदेश, मैसूर, तमिलनाडु, केरल) केलिए मैसूर में चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय स्थापित किये। ये महाविद्यालय एकवर्षीय बी.एड. व एम.एड. पाठ्यक्रम, चार वर्षीय बी.एड. एकीकृत पाठयक्रम, सेमीनार, कार्यशाला आदि का आयोजन करते हैं।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की शतप्रतिशत आर्थिक सहायता से देश में 50 से अधिक विश्वविद्यालयों में एकेडमिक स्टाफ कॉलेज की स्थापना की जा चुकी है जो महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में नवनियुक्त अध्यापकों के लिए अनुस्थापन पाठ्यक्रम (ओरियेंटलकोर्स), तथा वरिष्ठ अध्यापकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (रिफरेशरकोर्स) का आयोजन कर रहे हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी 1990 तथा 2001 में मॉडल अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम बनाया तथा सन 2006 में एन.सी.टी.ई. व एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम बना है।[5]

सन्दर्भः

1 गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2009) : भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 406.

2 अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2007): आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्याएँ और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ. 189.

3 पाण्डेय, डॉ. कामता प्रसाद (1999) : भारतीय शिक्षा की समस्यायें –वर्तमान संदर्भ, अमिताश प्रकाशन, मेरठ, पृ. 76.

4 सिंह, महेन्द्र एवं अनिल कुमार शर्मा (2011) : प्राचीन काल से वर्तमान तक अध्यापक शिक्षा का स्वरूप, विकास और परिवर्तन : वर्तमान सन्दर्भ में, एशियन जर्नल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी, वा.1, जून. पृ. 63.

5 कुमार, डॉ. मधुप कुमार (2011) : वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा की बाधाएँ एवं समाधान, रिसर्च एनालिसिस एण्ड डीवेल्यूशन, वा. 2, अंक 19, अप्रैल, पृ. 217–218.